चाचा जी

मेरे लाहौर से बम्बई से लौटने के बाद 1944 से 47 की अवधि में मेरे पिताजी श्री गेंदालाल जी मुझे हरिहर नाथ मिश्र से मिलवाने ले गए थे। उस समय वह गोवालिया टैंक स्थित भवन 'दि क्लिफ' में आ गए थे। माथुर चतुर्वेदी समुदाय की गतिविधियां मैंने 1951 में पढ़ाई समाप्त करने के बाद बम्बई आने पर आगे बढ़ायी। उस सम्बन्ध में हरिहर नाथ जी से मिलना जुलना अधिक हो गया।

कैलाश चन्द्र पाठक जी को उपरोक्त संस्था का अध्यक्ष बनाया गया। उनसे जुड़े बुद्धिजीवी वर्ग में मिश्रा जी प्रमुख थे। कैलाश पाठक के बम्बई छोड़ने के बाद मिश्रा जी संस्था के अध्यक्ष बने। तब मेरा उनसे संपर्क बढ़ा। अन्य प्रमुख महानुभाव जैसे वैद्य श्री नाथ जी (बनारस), सुदामा प्रसाद जी तथा माधव राम जी आदि भी काफी सक्रिय हो गए थे, पाठक जी के समय से ही।

1951–52 तक मेरा उनसे संपर्क तथा सम्बन्ध अधिक पुख्ता हो गया। डाक्टर पटनी उनके पारिवारिक चिकित्सक (होम्योपेथिक) थे। नीरजा के सॉंस (अस्थमा) के उपचार के लिए मुझे उनके पास अधिक जाना पड़ा। भरतपुर में विवाहित उनकी बहन (मिटठा बुआ) का मुझ पर अधिक स्नेह था। उन्होंने मेरे विवाह का प्रस्ताव पेश किया। 1952 में एक समय वह अकेले थे। उनके अन्य परिवारजन जयपुर गए हुए थे। एक दिन मैं उनसे मिलने गया। वह मुझे ग्रांट रोड में स्थित एक थियेटर में 'राम राज्य' सिनेमा ले गए। रविवार का दिन था। वह शायद मुझे परखना चाहते थे। बातचीत में उन्होंने मुझे पास किया। अवश्य ही जयपुर कहलवाया होगा। मेरे 1953 जून में सुधा जी से विवाह का श्रेय मिश्रा जी का था। प्रस्तावित मिटठा बुआ ने किया था। पूरा श्रेय मिश्रा जी का। मेरे पिताजी उन्हें बहुत मानते थे। तब मैं झावेरी बाजार में छोटे से घर में रहता था। पारले में दवाखाना था। बारात को रिसीव करने के लिए वह स्वयं बस के जयपुर में पहुंचने पर उपस्थित थे। मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ।

मेरे विवाह के बाद उन्होंने अपनी पुत्री के समान स्नेह मेरी श्रीमती जी को दिया। सदैव अपने दायित्व का निर्वहन चाची जी (उनकी पत्नी) ने भी किया।

वह बहुत सरल और सहज तथा मिलनसार थे। वह छोटे, बड़े तथा बच्चे के साथ सहज स्वभाव से घुलमिल जाते थे। वह आल राऊन्डर थे। हर विषय पर गहराई तक बात कर सकते थे। उनमें सामाजिकता बहुत थी। प्रत्येक के सुख दुख में भागीदार होना तथा सहयोग देना उनका विशेष गुण था।

उन्होंने असंख्य व्यक्तियों की व्यवसाय, नौकरी तथा परामर्श के क्षेत्र में मदद की। दृष्टि कमजोर होने पर भी वह समाज के कार्यों में सक्रिय थे।

अपने दुख को कभी किसी से कहते नहीं थे। अपने आप में सह लेते थे।

मेरे साथ उनके सम्बन्ध अपने पुत्र, मित्र तथा समाज के कार्यकर्ता के समान थे। सहयोगी के रूप में मुझे मानते थे। मैं साधारण परिवार का साधारण व्यक्ति था। किसी से भी परिचय करवाने पर वह पूरे सम्मान तथा गरिमा से मिलवाते थे। बहुत विनोदप्रिय स्वभाव था उनका। गुण ग्राहकता भी उनमें थी। गुणवान व्यक्ति का सम्मान करना उनका स्वभाव था। विचारवान, विवेकशील तथा कर्मठ थे। गुणवान व्यक्ति से आत्मीय सम्बन्ध बना सकते थे।

बम्बई आने पर मेरे साढू कैलाश नाथ (कलकत्ता) उनके यहां सदैव रुकते थे। हम तीनों एक बार वरली पर समुद्र के किनारे पर बैठे। काफी देर तक कविता पाठ हुआ। चाचाजी ने उसमें बहुत रुचि ली। वहीं पर मेरे सुझाव पर K B D A काशी भवन दामाद, एसोसिएशन नामक संस्था का गठन हुआ। कैलाश जी उसके अध्यक्ष तथा मैं उसका महामंत्री मनोनीत हुआ। बाद में काशी भवन के सब दामाद उस कड़ी में जुड़ते गए।

उन सबका आना जाना चाचा के यहां होने लगा। वह हम सबके केन्द्र बिन्दु थे।

अंत के दिनों में मैंने उन्हें बम्बई हास्पिटल में भरती करवाया। जब वह आई0सी0यू0 में भरती थे, उनकी मृत्यु से एक दिन पहले तक मैं उनसे मिला था। डा0 बी0के0 गोयल उनका इलाज कर रहे थे जो उनके भतीजे डाक्टर श्याम नाथ मिश्र के बहुत अंतरंग मित्र थे। अगले दिन या शीघ्र ही वह अस्पताल से छूट जाएंगे, यह मेरा अनुमान था। लेकिन संभवतः भगवान को कुछ और ही मंजूर था। सब प्रयासों के बावजूद वह बचाए न जा सके।

परिवार तथा समाज के एक रहनुमा चले गए।

वैध सुरेश चतुर्वेदी

18—12—2004

मेरा रिश्ता भूपेन्द्र नाथ जी के माध्यम से हुआ था। वह मेरे बाबा लगते थे।

मैंने उन्हें सबसे पहले विदिशा में सन् 1969 के आस पास देखा था। अम्मा जी उनके साथ आई थीं। संभवतः वह दोनों मुझे देखने आए थे। उस समय तक मेरे एंगेजमेन्ट के दो वर्ष हो चुके थे। मैं उस समय पी0एच–डी0 कर रहा था तथा सम्राट अशोक टेक्नोलोजिकल इंस्टीट्यूट में पढ़ा भी रहा था। विक्रम विश्वविद्यायल से मैं डाक्टरेट कर रहा था।

चाहे आदमी छोटा हो या बड़ा – वह उन्हें सरलता से स्वीकार कर लेता था। वह अपनी बात सहजता से कह सकते थे।

मुझे आई0आई0टी0 कानपुर, दिल्ली के साथ बम्बई की लायब्रेरी में जाना था। उन्होंने मुझे बम्बई आने का निमंत्रण दिया। बम्बई आने पर अरुण भाई साहब मुझे लेने आए तथा बाद में छोड़ भी गए।

विवाह के बाद जब मैं पहली बार बम्बई गया तब चाचा मुझे बम्बई में महालक्षमी रेसकोर्स दिखाने ले गए। वह रेसकोर्स की यह मेरी पहली विजिट थी। मेरे विवाह से पहले उनकी ओर से शादी जल्दी करने का आग्रह था।

बात करने में उनके साथ मुझे कभी यह महसूस नहीं हुआ कि किसी बुजुर्ग से बात कर रहे हैं। वह बहुत खुले दिल के थे। उम्र का फासला वह महसूस नहीं होने देते थे।

जब वह बम्बई हास्पिटल में थे, मैं उन्हें देखने गया। जब मैं बम्बई से वापिस लौट रहा था, तब मैंने उन्हें पहली बार भावुक देखा। यह उनके स्वभाव के विपरीत था क्योंकि अन्यथा वह अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं करते थे।

विवाह से पहले अम्मा तथा मेरी नानी जी का बचपन का साथ था। मेरे मामा रोहन लाल जी का उनके यहां आना जाना था। मेरे विवाह के समय रोहन लाल जी डिप्टी मिनिस्टर रेलवे थे।

07–01–2005